मैथिलीशरण गुप्त

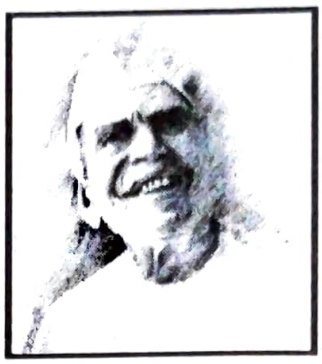

जन्म : 1886 ।
निधन : 1964 ।
जन्म-स्थान : चिरगाँव, झाँसी, उत्तर प्रदेश ।
शिक्षा : स्वाध्याय द्वारा ।
भाषाज्ञान : हिंदी, संस्कृत, बंगला, उर्दू आदि ।
कृतियाँ : रंग में भंग, जयद्रथ वध, भारत-भारती, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया, गुरुकुल, विकट भट, सिद्धराज, वैतालिक, किसान, अनघ, तिलोत्तमा, चंद्रहास आदि ।
अनुवाद - पलासी का युद्ध, मेघनाद वध, वृत्रसंहार आदि ।

आधुनिक काल के द्वितीय उत्थान–'द्विवेदी युग' के प्रमुख कवि हैं मैथिलीशरण गुप्त । वे आधुनिक भारत के प्रथम राष्ट्रकवि तथा नए भारत में हिंदी जनता के प्रतिनिधि कवि के रूप में सम्मानित हैं । गुप्त जी ने 'भारत-भारती' जैसी कृति द्वारा हिंदी जनता में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना भर दी थी, तभी से वे राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्ध हुए । भारतेंदु युग में स्वदेश प्रेम और जातीय गौरव की जिस भावना का समारंभ हुआ उसके आगामी विकास के सूत्रधार गुप्त जी ही थे । राष्ट्रीय आंदोलन से मैथिलीशरण गुप्त के काव्य का गहरा संबंध रहा है । गुप्त जी ने अपने काव्यों द्वारा आधुनिक भारतीय जीवन और समाज को समग्रता में समझने-समझाने तथा उसे व्यक्त करने का अनवरत प्रयास किया ।

उन्होंने अपने व्यापक उद्देश्य और कथ्य के अनुरूप प्रबंधकाव्य का माध्यम अपनाया और आधुनिक युग में प्रबंधकाव्य की लुप्त होती परंपरा को समर्थ संरक्षण दिया । उन्होंने अनेक महाकाव्यों और खंडकाव्यों की रचना की । वे एक वैष्णव एवं रामभक्त थे । स्वभावत: उन्होंने रामकथा और उससे जुड़े प्रसंगों एवं चरित्रों को लेकर कई काव्यों की रचना की । 'साकेत' जिसका अर्थ 'अयोध्या' है, उनका उत्कृष्ट महाकाव्य है । इसकी रचना उन्होंने मुख्यत: इस उद्देश्य से की थी कि उर्मिला काव्य की उपेक्षिता न रह जाए । काव्य का नाम 'साकेत' इसलिए है कि इसमें अयोध्या में होनेवाली घटनाओं और परिस्थितियों का ही वर्णन प्रधान है । राम, सीता और लक्ष्मण के वन-गमन के पीछे उर्मिला अयोध्या में ही रह गई थी । उस पर कवि की विशेष दृष्टि थी । 'द्वापर' कृष्णकथा को तथा 'यशोधरा' बुद्धकथा को लेकर लिखे गए उनके लोकप्रिय काव्य हैं । 'गुरुकुल' में उन्होंने सिख गुरुओं की महिमा का गान किया है । उनके काव्यों में चरित्र-चित्रण और प्रबंध कला की उत्कृष्टता निखरे हुए रूप में सामने आती है ।

प्रबंध के अतिरिक्त मैथिलीशरण गुप्त ने अन्य काव्यरूपों और शैलियों में भी रचनाएँ की हैं;

'तिलोत्तमा', 'चंद्रहास' और 'अनघ' उनके पद्यबद्ध रूपक हैं । 'वैतालिक', 'किसान', 'झंकार' आदि उनके प्रगीत और मुक्तक रचनाओं के उदाहरण हैं । 'झंकार' की गीतात्मक रचनाएँ आगे के हिंदी काव्य विकास 'छायावाद' के समानांतर दिखाई पड़ती हैं । गुप्त जी की सभी रचनाएँ जातीय गौरव और राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत हैं ।

खड़ी बोली हिंदी के स्वरूप निर्धारण और विकास के साथ-साथ उसे काव्योपयुक्त रूप प्रदान करने वालों में वे अन्यतम थे । भारतेंदु युग में खड़ीबोली को कविता की भाषा बनाए जाने की शुरुआत भर हुई थी । यह कार्य बड़े पैमाने पर द्विवेदी युग में हुआ । निश्चय ही आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में मैथिलीशरण गुप्त ने इसमें अग्रणी भूमिका निभाई । यह कहा जा सकता है कि आज की काव्य भाषा के निर्माण में उनकी आधारभूत भूमिका रही है ।

प्राचीन के प्रति पूज्यभावना और नवीन के प्रति उत्साहपूर्ण स्वागत भाव गुप्त जी की विशेषता है । उनमें कालानुसरण की अद्‌भुत क्षमता थी । उत्तरोत्तर बदलती भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की शक्ति ने उनके सुदीर्घ रचना-समय में बराबर उनका महत्त्व बनाए रखा ।

यहाँ प्रस्तुत कविता उनके संकलन 'झंकार' से ली गई है और स्पष्ट है कि संकलन की शीर्षक कविता है । 'द्विवेदी युग' के प्रतिनिधि कवि की यह ऐसी कविता है जिसमें आगे का स्वच्छंदतावादी काव्य विकास पूर्वाशित है । छायावाद का प्रादुर्भाव हो चुका था और गुप्त जी की संवेदना-कल्पना का वह संस्पर्श कर रहा था, उन्हें भीतर से बदल रहा था । यह कविता इस तथ्य का एकांत साक्ष्य पेश करती है । इस कविता में यह सचाई भी व्यक्त होती है कि स्वाधीनता आंदोलन की अंतर्व्याप्ति राष्ट्र के कोने-कोने में हो चुकी थी और स्वाधीनता तथा मुक्ति की प्यास संपूर्ण राष्ट्र को हिंदोलित कर रही थी । संपूर्ण राष्ट्र की एकीभूत मुक्तिकामना ही इस गीति रचना में स्वरित होती है ।

♦ ♦ ♦

" मैथिलीशरण गुप्त उस युग के प्रतीक पुरुष थे, जिसका एक प्रमुख लक्षण था – एक भारतीय अस्मिता की खोज की व्याकुलता । यह व्याकुलता राष्ट्रीयता का या राष्ट्र-मुक्ति के संग्राम का केवल परिणाम नहीं थी, बल्कि उसका कारण भी थी ।

गुप्तजी भारतीयता में निष्णात थे, उसके खोजी नहीं थे; हमारी ही भारतीयता की खोज हमें उनकी देहरी तक ले आती है । उसी देहरी पर खड़ा होकर मैं उनका स्वरूप निहारता हूँ । उनके काव्य की देहरी सांस्कृतिक भारत की देहरी है, जहाँ से कोई रीता नहीं लौटता, आप्यायित होकर ही लौटता है । "

(भारतीयता की खोज)
–अज्ञेय

झंकार

इस शरीर की सकल शिराएँ
हों तेरी तंत्री के तार,
आघातों की क्या चिंता है,
उठने दे ऊँची झंकार ।

नाचे नियति, प्रकृति सुर साधे
सब सुर हों सजीव, साकार
देश देश में, काल काल में
उठे गमक गहरी गुंजार ।

कर प्रहार, हाँ, कर प्रहार तू
भार नहीं, यह तो है प्यार,
प्यारे और कहूँ क्या तुझसे
प्रस्तुत हूँ मैं, हूँ तैयार ।

मेरे तार तार से तेरी
तान तान का हो विस्तार
अपनी अँगुली के धक्के से
खोल अखिल श्रुतियों के द्वार ।

ताल ताल पर भाल झुका कर
मोहित हों सब बारंबार
लय बँध जाय और क्रम क्रम से
सम में समा जाय संसार ।।

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि ने अपने शरीर की सकल शिराओं को किस तंत्री के तार के रूप में देखना चाहा है ?
2. कवि को आघातों की चिंता क्यों नहीं है ?
3. कवि ने समूचे देश में किस गुंजार के गमक उठने की बात कही है ?
4. 'कर प्रहार, हाँ कर प्रहार तू,
   भार नहीं, यह तो है प्यार,'
   यहाँ किससे प्रहार करने के लिए कहा जा रहा है । यहाँ भार को प्यार कहा गया है । इसका क्या अर्थ है ?
5. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

   (क) मेरे तार तार से तेरी
   तान तान का हो विस्तार
   अपनी अँगुली के धक्के से
   खोल अखिल श्रुतियों के द्वार ।

   (ख) ताल ताल पर भाल झुका कर
   मोहित हों सब बारंबार
   लय बँध जाय और क्रम क्रम से
   सम में समा जाय संसार ।।
6. कविता का केंद्रीय भाव क्या है ? अपने शब्दों में लिखें ।
7. कविता में सुरों की चर्चा है । इनके सजीव-साकार होने का क्या अर्थ है ?
8. इस कक्ति का स्वाधीनता आंदोलन से कोई सांकेतिक संबंध दिखाई पड़ता है । यदि हाँ ! तो कैसा ?
9. वर्णनात्मक कविता लिखने के लिए 'द्विवेदी युग' के कवि प्रसिद्ध थे, किंतु इस कविता में छायावादी कवियों जैसी शब्द योजना, भावाभिव्यक्ति एवं चेतना दिखलाई पड़ती है । कैसे ? इस पर विचार करें ।

कविता के आस-पास

1. यह कविता मैथिलीशरण गुप्त की है । गुप्त जी को राष्ट्रकवि कहा गया है । इस संदर्भ में विशेष जानकारी प्राप्त करें ।
2. गुप्त जी स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े हुए थे । स्वाधीनता आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े हिंदी के पाँच

अन्य कवियों एवं उनके रचना संसार की जानकारी प्राप्त करें और कक्षा में इस पर चर्चा करें ।

3. गुप्त जी पर महात्मा गाँधी का प्रभाव था । इस संदर्भ में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें और चर्चा करें ।
4. महावीर प्रसाद द्विवेदी गुप्त जी के साहित्यिक गुरु थे । आप अपने शिक्षक से इस विषय पर चर्चा करें और जानने की कोशिश करें कि किस तरह का साहित्यिक प्रशिक्षण द्विवेदी जी ने गुप्त जी को दिया ।
5. गुप्त जी के कुछ लोकप्रिय काव्यों को जानने की कोशिश करें और यह भी मालूम करें कि गुप्त जी के ये काव्य क्यों लोकप्रिय हुए ?
6. द्विवेदी युग को 'सुधार काल' भी कहते हैं । आप गुप्त जी के काव्य में इस प्रवृत्ति को ढूँढ़ने की कोशिश अपने शिक्षक की मदद से करें https://www.evidyarthi.in/
7. आधुनिक युग में रामकथा को लेकर काव्य रचना मैथिलीशरण गुप्त ने की है । उनके किस काव्य में रामकथा का कौन-सा पक्ष चित्रित किया गया है ? यह शिक्षक से जानने की कोशिश करें ।
8. गुप्त जी ने भारतीय इतिहास के उपेक्षित नारी पात्रों पर काव्य लिखकर उनके साथ साहित्यिक न्याय किया । मालूम करें कि वे नारी पात्र कौन-कौन से हैं और उन पर लिखे काव्यों के नाम क्या हैं ?

भाषा की बात

1. गुप्त जी की कविताओं में तुकों का सफल विधान है । इस कविता में प्रयुक्त तुकों को छाँट कर लिखें ।
2. पूरी कविता में अनुप्रास अलंकार है । अनुप्रास अलंकार क्या है ? कविता से इसके उदाहरणों को चुन कर लिखें ।
3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें –
   शरीर, शिरा, झंकार, प्रकृति, नियति, गमक, तान, अंगुली, भाल, संसार
4. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाएँ –
   शरीर, चिंता, प्रकृति, सुर, संसार, नियति, काल, श्रुति, लय

शब्द निधि

शिरा	:	नस-नाड़ी, धमनी
झंकार	:	संगीतमय ध्वनि
तंत्री	:	वीणा, तार से बने हुए वाद्य
आघात	:	चोट
नियति	:	भाग्य
गमक	:	संगीत का पारिभाषिक शब्द जो कंपनपूर्ण रमणीक ध्वनि के अर्थ में है ।
गुंजार	:	गूँज
तार तार	:	रेशा-रेशा
अखिल	:	संपूर्ण
श्रुतियों	:	ध्वनियों
भाल	:	माथा
सम	:	संगीत का शांतिमय चरम क्षण
सकल	:	संपूर्ण